शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ७ : नई दिल्ली : २०-२६ मई २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बालोतरा विराज रहे हैं। बालोतरा में निर्धारित सभी बड़े कार्यक्रम सानंद संपन्न हो चुके हैं। २२ मई को बालोतरा से विहार कर अनेक क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए आचार्यप्रवर ६ जून को पचपदरा पधारेंगे। पचपदरा में पूज्यप्रवर २७ जून तक प्रवास करेंगे। आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस, आचार्य महाप्रज्ञ जन्म दिवस जैसे महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम पचपदरा में समायोजित होंगे। २१ जून को यहां दीक्षा महोत्सव का भी आयोजन है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार पूज्यप्रवर २८ जून को चतुर्मास हेतु जसोल पधार जाएंगे।

vkpk; egkJe.k ver egkRlo d volj ij likfnr dk;

तेरापंथ धर्मसंघ के एकमाधिशास्ता महातपस्वी शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमण के ५०वें वर्ष को धर्मसंघ द्वारा आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के रूप में अत्यन्त श्रद्धा, उल्लास और आह्लाद के साथ गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के कुशल आध्यात्मिक निर्देशन में वर्ष भर पंचाचार की आराधना का सघन अभियान चला। अनेक-अनेक सामाजिक गतिविधियों के साथ-साथ संघीय प्रभावना के भी विभिन्न उपक्रम इस वर्ष में समायोजित हुए। जहां आध्यात्मिक कार्यों के संपादन में साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का श्रम मुखर रहा, वहीं विविध धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों के निष्पादन में विभिन्न केन्द्रीय, संघीय संस्थाओं तथा अनेक अन्य संस्थाओं का निष्ठापूर्ण श्रम उल्लेखनीय है। वर्ष भर में संपादित हुए कार्यों की एक झलक यहां प्रस्तुत है--

Kkukpkj

- ☐ ५१ विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन पर व्याख्यान।
- ☐ ५००० से अधिक व्यक्तियों द्वारा श्रावक संबोध कण्ठस्थ।
- ☐ जैन स्कॉलर परियोजना का शुभारंभ, २२ संभागी।
- ☐ आचार्य महाश्रमण एजुकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना।
- ☐ अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत भाषा कार्यशाला का आयोजन।
- ☐ अध्यात्म और विज्ञान पर संवाद।
- ☐ द स्कूल विद ए डिफरेंस का प्रारंभ।

ifr;kfxrk

व्यक्तित्व विकास के उद्देश्य से साधु-साध्वियों और समणश्रेणी के लिए ९ प्रतियोगिताएं समायोजित हुईं--

ifr;kfxrk	lHkkxh
१. भाषण प्रतियोगिता	२३
२. वाद-विवाद प्रतियोगिता	१६
३. गीत गायन प्रतियोगिता	३८
४. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता	११६

५. अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता ६८
६. गीत निर्माण प्रतियोगिता १८६
७. बाल कहानी लेखन प्रतियोगिता ४४
८. कविता निर्माण एवं प्रस्तुति प्रतियोगिता १५
६. आशु भाषण प्रतियोगिता १३

dy IHkkxh ‡„„

गृहस्थों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर पांच प्रतियोगिताएं समायोजित हुईं--

१. भाषण प्रतियोगिता ११६
२. गीत गायन प्रतियोगिता ३४७
३. वाद-विवाद प्रतियोगिता ११५०
४. निबन्ध लेखन प्रतियोगिता ४५०
५. जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता २००८
६. पंचाचार कैलेण्डर निर्माण प्रतियोगिता ६५०

dy IHkkxh ‡‚„†

lkfgR;

□ आचार्यश्री महाश्रमण के पूर्व प्रकाशित साहित्य का नए परिवेश में व्यवस्थित प्रकाशन।
□ आचार्यप्रवर की तथा उनसे संबद्ध ६ नवीन कृतियों का प्रकाशन।
□ आचार्यप्रवर की तथा उनसे संबद्ध कृतियों की १००८०० प्रतियों का प्रकाशन।
□ ७ भाषाओं में विविध कृतियों का अनुवाद--अंग्रेजी, नेपाली, तमिल, कन्नड़, गुजराती, मराठी, बांग्ला।
□ ५० विश्वविद्यालयों में आचार्य महाश्रमण के साहित्य का प्रेषण।
□ राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, प्रबुद्धजनों को साहित्य प्रेषण।

n'kukpkj

□ दर्शनाचार पर पूज्यप्रवर के प्रभावी प्रवचन।
□ प्रवचनमाला के प्रवचनों का ४ दिन में पुस्तक के रूप में प्रकाशन।
□ देश भर की सभाओं को 'शिलान्यास धर्म का' पुस्तक प्रेषित।
□ ३००० परिवारों की सोशियल ऑडिट।
□ ३२०० अजैन व्यक्तियों द्वारा सम्यक्त्व दीक्षा।
□ २०,००० से अधिक घरों में पूज्यवर के चित्र का वितरण।

pkfj=kpkj

□ ११००० से अधिक व्यक्तियों द्वारा बारह व्रतों का संकल्प।
□ २०००० से अधिक व्यक्तियों द्वारा विविध संकल्प।
□ ३५००० से अधिक तेरापंथी व्यक्तियों द्वारा नशामुक्ति का संकल्प।
□ अणुव्रत से संबद्ध संस्थाओं द्वारा ५०,५०,००० नशामुक्ति संकल्प पत्र समर्पित।
□ दिल्ली में नगर निगम, शिक्षा विभाग द्वारा नशामुक्ति दिवस का आयोजन। १७२६ विद्यालयों में लगभग इक्कीस हजार शिक्षक और १० लाख विद्यार्थियों द्वारा नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण।
□ 'नशामुक्त केलवा' अभियान के अंतर्गत ३८६२ लोगों द्वारा नशामुक्ति का संकल्प।
□ सामाजिक स्वस्थता की प्रेरणा देने वाले अनेक कवि सम्मेलनों का समायोजन।
□ पारिवारिक सौहार्द के लिए 'कुटुम्ब' और 'सहयात्री' नाटिका का मंचन।

rikpkj

- साधु-साध्वियों द्वारा पचरंगी तप।
- गृहस्थों द्वारा १०५ पचरंगी तप। इसके अतिरिक्त सैकड़ों एकासन,आयंबिल, मौन, सामायिक आदि की पचरंगी।
- बेंगलुरु में ११११ व्यक्तियों द्वारा सामूहिक तेला।
- ५०,०००,००००(पचास करोड़) नवकार मंत्र जप का अनुष्ठान।

oh;kpkj

- ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की आराधना में शक्ति का नियोजन।

lkekftd lg;kx

- कांकरोली में आचार्यश्री महाश्रमण डायलिसिस सेंटर की स्थापना।
- अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त 'आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ चल चिकित्सालय' का निर्माण एवं संचालन।
- ६० चिकित्सा शिविरों का आयोजन, जिनमें १३५०६ व्यक्ति लाभान्वित।
- २५०० छात्र-छात्राओं को केरियर काउंसलिंग।
- २५०० से अधिक विद्यार्थियों को एजुकेशन किट का वितरण।
- मुम्बई में एक दिन में ५७०० युनिट रक्तदान।
- मुम्बई में एक दिन में २६० पाइल्स ऑप्रेशन का विश्व कीर्तिमान। कुल ४१२ ऑप्रेशन।
- १६३० व्यक्तियों की निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा एवं ५६६२ व्यक्तियों का नेत्र परीक्षण।
- विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिविरों में ७१०० युनिट से अधिक रक्तदान।

iHkkouk

- पेसिफिक यूनिवर्सिटी द्वारा आचार्यप्रवर को 'शान्तिदूत' सम्मान समर्पित।
- राजस्थान सरकार द्वारा जाणुन्दा में 'आचार्य महाश्रमण पुल' का निर्माण।
- सर्वधर्म सम्मेलनों का आयोजन।
- 'महाश्रमण विहार' नामक तीन भवनों का लोकार्पण तथा १८ से अधिक स्थानों पर महाश्रमण द्वार, महाश्रमण मार्ग, महाश्रमण चौक आदि का लोकार्पण।
- अनेक स्थानों पर विशाल जनप्रतिनिधि सम्मेलन।
- आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के शुभारंभ के अवसर पर मुम्बई और हरियाणा से स्पेशल ट्रेन।

iT;oj dh lfUufèk e fof"k"V 0;fDr;k dk vkxeu

- श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल, राष्ट्रपति भारत गणतंत्र
- श्री ए.पी.जे.अब्दुल कलाम, पूर्व राष्ट्रपति भारत गणतंत्र
- श्री शिवराज पाटिल, राज्यपाल पंजाब एवं राजस्थान
- श्रीमती कमला बेनीवाल, राज्यपाल गुजरात
- श्री मोहनराव भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
- श्री अन्ना हजारे, सुप्रसिद्ध समाजसेवी
- श्री श्रीप्रकाश जायसवाल, केन्द्रीय मंत्री भारत सरकार
- श्री सी.पी.जोशी, केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार
- श्री प्रदीप जैन, केन्द्रीय मंत्री, भारत सरकार
- श्री सचिन पायलट, राज्यमंत्री, भारत सरकार
- श्री सुदीप बन्दोपाध्याय, राज्यमंत्री भारत सरकार

- श्री शाहनवाज हुसैन, राष्ट्रीय प्रवक्ता- भारतीय जनता पार्टी
- श्री दिग्विजयसिंह, राष्ट्रीय महासचिव, कांग्रेस
- श्रीमती किरण माहेश्वरी, राष्ट्रीय महासचिव- भारतीय जनता पार्टी
- श्री वेंची ओंजी, राजदूत, ताइवान
- श्री हंसराज तातेड़, पर्यावरण मंत्री, नेपाल
- श्री दीपेन्द्रसिंह शेखावत, विधानसभाध्यक्ष राजस्थान।
- अन्य अनेक सांसद, विधायक एवं विभिन्न राज्यों के मंत्री आदि।

ipkj ilkj

- आचार्य महाश्रमण ब्रोसर का निर्माण।
- आचार्य महाश्रमण डाक्यूमेंट्री का निर्माण।
- WWW.acharyamahashraman.in वेवसाइट का निर्माण।
- फेसबुक पर अमृत महोत्सव का पेज ३००० सदस्य।
- आचार्य महाश्रमण एस.एम.एस.ब्रिगेड।
- आचार्य महाश्रमण चित्र दीर्घा।
- बारह व्रत और नशामुक्ति के १०००० कैलेण्डर वितरित।
- अनेक पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांक।
- चल सचिवालय का संचालन।
- Youtube पर प्रतिदिन के प्रवचन।
- अभ्यर्थना में गीतों की दो सीडी का निर्माण।
- टी-शर्ट, केप, होर्डिंग्स, पोस्टर, स्टीकर, क्यूब आदि निर्मित।

fny l vk, nyj egnh

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के पावन अवसर पर सुप्रसिद्ध पंजाबी पॉप सिंगर श्री दलेर मेंहदी ने पूज्य आचार्यवर के दर्शन किए। अपने निर्धारित कार्यक्रम में परिवर्तन कर कई फ्लाइटें बदलते हुए वे बालोतरा पहुंचे। रात्रिकालीन कार्यक्रम में श्री दलेर मेंहदी ने भावपूर्ण गीतों, भजनों आदि के द्वारा पूज्यवर के पादाम्बुज में अपनी श्रद्धा प्रणति अर्पित की। अपने एक कार्यक्रम की बड़ी धनराशि लेने वाले श्री दलेर मेंहदी एक पैसा भी लिए बिना अपने दिल की भावना से बालोतरा पहुंचे। अपने कार्यक्रम में प्रयुक्त होने वाले साउंड सिस्टम वे अपने साथ लेकर आए। इतना ही नहीं, स्वयं का तथा अपनी टीम का पूरा व्यय भार भी उन्होंने स्वयं वहन किया। उन्होंने कार्यक्रम प्रस्तुति के समय स्पष्ट कहा--'मैं यहां आप लोगों के लिए नहीं आया हूं। मैं तो गुरूजी व संतों को सुनाने आया हूं। जब तक गुरूजी सुनेंगे, मैं सुनाता रहूंगा। श्री मेंहदी के बालोतरा पहुंचने में मुनि जयकुमारजी का संपर्क योगभूत बना।

ije J); vkpk;Jh egkJe.k ckykrjk e

vuif{kk g vè;kRe dk i;kx

^ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मंत्री मुनिश्री का वक्तव्य हुआ। श्री राजकुमार बरड़िया (जयपुर) एवं श्री शान्तिलाल 'शान्त' ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'यह दृश्य जगत् दुःख बहुल है। यहां प्राणी विभिन्न रूपों में दुःख भोगते हैं। जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, बीमारी दुःख है, मौत भी दुःख है। दुःख

की इस स्थिति में व्यक्ति प्रमाद व पाप से स्वयं को बचाने का प्रयास कर सकता है। व्यक्ति यह अनुप्रेक्षा करता है कि इस क्षणभंगुर जीवन में मैं धर्माराधना में ज्यादा से ज्यादा अपने समय का नियोजन करूं, सत्पथ पर चलने का अभ्यास करूं। ऐसा करके मानव जीवन का समीचीन लाभ प्राप्त किया जा सकता है। अनुप्रेक्षा का प्रयोग अध्यात्म का प्रयोग है, एकाग्रता व विरक्ति का प्रयोग है। सबमें पवित्र एकाग्रता का अभ्यास विकसित हो।' आज बुद्ध पूर्णिमा के दिन आचार्यप्रवर ने महात्मा बुद्ध को एक विशिष्ट महापुरुष बताते हुए उनकी करुणा का उल्लेख किया।

आज मध्याह्न में तेरापथ प्राफेशनल फोरम के तत्त्वावधान में आयोजित केरियर कोंसिलिंग प्रोग्राम में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति जीवन में किसी भी प्रोफेशन को स्वीकार करे, उसमें कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी व नैतिकता का प्राधान्य रहे। अच्छा जीवन जीने के लिए नशामुक्त रहना आवश्यक है।' आचार्यवर की प्रेरणा से संभागी चार सौ छात्र-छात्राओं में प्रायः सभी ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। लगभग चार घंटे तक चले इस कार्यक्रम में श्री जयशंकर ने कैरियर के टिप्स दिए। मुनि उदितकुमारजी व मुनि रजनीशकुमारजी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। छात्र-छात्राओं की ऑनलाइन परीक्षा लेकर आई.क्यू.परीक्षण भी किया गया।

ePNk Hktd g ,dRo vui{kk

‰ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री भंवरलाल टावरी-माहेश्वरी ने अपने विचार रखे। माहेश्वरी समाज के लोग आज बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'पदार्थ और परम दोनों साथ नहीं चल सकते। जो व्यक्ति पदार्थ, प्रतिष्ठा, सत्ता एवं सम्मान के पीछे चलेगा, वह परम से दूर हो जाएगा। इसके विपरीत जो पदार्थ से हटकर चलेगा, वह परम को प्राप्त होगा, परम आनंद की अनुभूति कर सकेगा।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने एकत्व अनुप्रेक्षा पर मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'प्राणी अकेला आता है और अकेला ही जाता है। कर्मबंधन अकेला करता है तो कृत कर्म का भोग भी अकेला ही करता है। वस्तुतः साधक यह अनुभव करे कि वह अकेला है। शरीर शाश्वत नहीं है, शाश्वत है केवल आत्मा। संयोग की स्थिति में वियोग निश्चित है। एकत्व की अनुभूति की स्थिति में व्यक्ति पदार्थ का उपयोग या उपभोग तो करता है, पर वह आसक्त नहीं बनता। आसक्ति के परिहार से एकाकीपन की साधना सरल हो जाती है। आसक्ति बंधनोन्मुखी और अनासक्ति मोक्षाभिमुखी होती है। विषयासक्त भाव या मन बंधन की ओर ले जाता है और विषय विरक्त मन या अध्यात्म संलग्न मन मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है।'

नैतिक आचरण पर बल देते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'अनासक्ति की स्थिति में नैतिक आचरण संभव है। लोभ की स्थिति में गलत काम हो सकते हैं। संत अनासक्ति की साधना में तल्लीन रहते हैं। गृहस्थ को भी त्याग व संयम का अभ्यास पुष्ट करना चाहिए। भारत भूमि संतों की भूमि है। यहां कितने ही त्यागी-वैरागी संत हुए हैं। इन संतों की शिक्षा को अंगीकार कर लोगों ने स्वयं को धन्य बनाया। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत व परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से संयम का उपदेश दिया। व्यक्ति व्यवहार में सबके बीच रहता है। अंततः 'मैं अकेला हूं'-- यह अनुचिंतन स्पष्ट हो, यही एकत्व अनुप्रेक्षा है। मूर्च्छा को तोड़ने का यह महत्त्वपूर्ण उपाय है और अध्यात्म साधना का प्रयोग है।' कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

ePNk dh U;urk e Igk;d g HknfoKku

Š ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि राजकुमारजी ने गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती मीरा अग्रवाल ने पूज्यवर के प्रवास के संदर्भ में अठाई तप का प्रत्याख्यान किया। यह उनकी बीसवीं अठाई थी। मंत्री मुनिश्री का अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में अन्यत्व अनुप्रेक्षा का विवेचन करते हुए कहा--'विश्व में आस्तिक व नास्तिक दोनों विचारधाराएं रही हैं। नास्तिक तज्जीवतच्छरीरवादी होते हैं। उनका मंतव्य है कि जो शरीर है, वही जीव है। जो जीव है, वही शरीर है। आस्तिकवाद आत्मा और शरीर को भिन्न-भिन्न मानता है। इस मत का पुनर्जन्म में विश्वास है। व्यक्ति यह अनुप्रेक्षा करे--आत्मा अलग है, शरीर अलग है। मैं शरीर नहीं, आत्मा हूं। बीमारी शरीर में है, आत्मा में नहीं है। अनुप्रेक्षा के अभ्यास से शरीर और आत्मा का पार्थक्य अनुभूति में आ जाता है। आत्मा व शरीर के भेद का चिंतन करने से शरीर की मूर्च्छा न्यून होने लग जाती है। साधु को शरीर पर मोह नहीं करना चाहिए। शरीर को भोजन देना पड़ता है, अन्यथा साधना में बाधा उपस्थित हो जाती है। मूर्च्छा से उपरत होकर मुनि भोजन ग्रहण करता है। अन्यत्व अनुप्रेक्षा के अंतर्गत साधक यह अनुचिंतन करता है कि ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुणरूप चेतना मेरी है। इसके अतिरिक्त सब पृथक् है। कायोत्सर्ग का प्रयोग शिथिलता के साथ भेदविज्ञान का महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। शरीर की भिन्नता का प्रयोग बड़ी साधना है।'

प्रवचनोपरान्त श्री विवेक बोथरा (बरपेटा-असम) ने अपनी दीक्षा की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने अत्यन्त कृपा कर उसे २१ जून को पचपदरा में दीक्षा देने की घोषणा की एवं मुमुक्षु धीरज जैन (तोशाम) को साधु प्रतिक्रमण सीखने की स्वीकृति प्रदान की।

vkpk;Jh egkJe.k ekxZ dk yksdki.kZ

« ebA आज प्रातः प्रवचन से पूर्व परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में आचार्यश्री महाश्रमण मार्ग का लोकार्पण किया गया। नवनिर्मित तेरापंथ भवन के परिपार्श्व में स्थित इस मार्ग को बालोतरा नगरपालिकाध्यक्ष श्री महेश बी.चौहान ने पूज्यवर से मंगलपाठ का श्रवण कर लोकार्पित किया। इस अवसर पर अनेक पार्षद और नगर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में छठीं भावना अशौच की विवेचना करते हुए कहा--'शास्त्रकारों ने शरीर को अशुचि कहा है। व्यक्ति अपने शरीर को ऊपर से कितना ही स्वच्छ बना ले, किन्तु भीतर तो मल-मूत्र, कफ आदि अशुचि विद्यमान रहती है। व्यक्ति इस अशुचियुक्त शरीर के बाहरी सौन्दर्य का अहंकार कर लेता है। उसके प्रति आसक्त बन जाता है। यदि शरीर की अशुचिता की अनुप्रेक्षा की जाए तो विरक्ति का भाव उत्पन्न हो सकता है। यह शरीर अशुचियुक्त है, किन्तु यही मोक्ष का साधन भी बन सकता है। इससे धर्म की साधना कर आत्मा को भवसागर से पार किया जा सकता है।' कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

ukdk e Nn d leku g vkJo

f, ebA परम पावन आचार्यप्रवर प्रातः रुग्ण और अक्षम व्यक्तियों को दर्शन देने हेतु पधारने के क्रम में एक घर में पधारे। वहां पहले से अवस्थित स्थानकवासी ज्ञानगच्छ के प्रकाश मुनिजी के शिष्य रमेश मुनिजी की पूज्यवर से अनायास भेंट हो गई। पूज्यवर का उनसे संक्षिप्त वार्तालाप भी हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने भावनाधारित प्रवचनमाला के अंतर्गत सातवीं आश्रव भावना की विवेचना करते हुए कहा--'आश्रव वह तत्त्व है, जो संसार का कारण है, जन्म-मरण का कारण है। यदि वह बिल्कुल न हो तो जन्म-मरण की परम्परा चल ही नहीं सकती। जैसे नाला पानी के आने का मार्ग होता है, उसी प्रकार आश्रव कर्मों के आने का मार्ग है। वह नौका में छेद के समान है, जो डुबोने वाला होता है। आश्रव के द्वारा कर्म आत्मा के साथ चिपकते हैं। आश्रव के पांच भेद हैं--मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग। प्राणी अनुप्रेक्षा के द्वारा उनसे मुक्त होने का अनुचिंतन करता हुआ उनसे बचने का प्रयास करे, यह प्राणी के लिए श्रेयस्कर होगा।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक अभिभाषण हुआ तथा मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया। दिल्ली से समागत विद्या भारती स्कूल के जनरल सेक्रेटरी श्री धनपत लूनिया ने स्मारिका 'अनुभूति' तथा पंचसूत्री अणुव्रत के संकल्प पत्र पूज्यवर को समर्पित किए।

tu fo|k dk;'kkyk dk lek;ktu

परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में १-१० मई तक बालोतरा तेरापंथ युवक परिषद् एवं तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया गया। रात्रि में एक घंटे तक चलने वाली इस कार्यशला में मुनि उदितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि अनंतकुमारजी एवं मुनि अभिजितकुमारजी द्वारा संभागियों को जैन दर्शन और तेरापंथ से संबद्ध विषयों का प्रशिक्षण दिया गया।

ek{k dk ekx loj

ff ebA आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने आठवीं संवर भावना की विवेचना करते हुए कहा--'नौ तत्त्वों में छठां तत्त्व है संवर। आश्रव का ठीक विपरीत शब्द है संवर। इसके द्वारा कर्मों के आगमन के द्वार को निरुद्ध किया जा सकता है। संवर का गुणस्थान के साथ संबंध है। ज्यों-ज्यों संवर की साधना बढ़ती है, व्यक्ति गुणस्थानों में आरोहण करता जाता है। मिथ्यात्व आश्रव नहीं तो पंचम गुणस्थान में सम्यक्त्व संवर , अव्रत आश्रव नहीं तो छठे गुणस्थान में व्रत संवर, प्रमाद आश्रव नहीं तो सप्तम गुणस्थान में अप्रमाद संवर, कषाय आश्रव नहीं तो ग्यारहवें, बारहवें आदि गुणस्थान में अकषाय संवर और योग आश्रव नहीं तो चौदहवें गुणस्थान में अयोग संवर निष्पन्न हो जाता है। श्रावक बारह व्रतों को स्वीकार कर ले तो आंशिक रूप में व्रत संवर की साधना हो जाती है। मोक्ष की साधना में संवर का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसलिए व्यक्ति जीवन में त्याग को बढ़ाने का प्रयास और संवर की अनुप्रेक्षा करे।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का भी प्रेरक उद्बोधन हुआ। मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया।

jk"Vh; lLdkj fuek.k f'kfoj dk 'kHkkjHk

आज से परम श्रद्धेय आचार्यवर के पावन सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित अष्टदिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का शुभारंभ हुआ। शुभारंभ सत्र के प्रारंभ में शिविर संभागी छात्राओं द्वारा प्रार्थना गीत का संगान किया गया। महासभा के अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू, महासभा के सहमंत्री तथा शिविर संयोजक श्री भूपेन्द्रकुमार मूथा ने अपने भावोद्गार व्यक्त करते हुए बताया--शिविर में लगभग ६०० छात्र-छात्राएं संभागी बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त इस शिविर में संभागी बनने के इच्छुक सैकड़ों बच्चों को व्यवस्थाओं में सुगमता की दृष्टि से आगामी शिविर में संभागी बनाने का आश्वासन दिया गया है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा--'संस्कार निर्माण शिविर गर्मियों में यदा-कदा लगता रहता है। आश्चर्य की बात तो यह है कि इतनी भीषण गर्मी में इतनी बड़ी संख्या में बच्चे कहां-कहां से आए हैं। एक मिशन के प्रति इतना उत्साहित होना अच्छी बात है। अष्टदिवसीय शिविर के सभी संभागी निष्ठा के साथ ज्ञानार्जन और संस्कारार्जन का प्रयास करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने किया।

f„ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में नवीं भावना 'निर्जरा' की चर्चा करते हुए तपस्या के बारह भेदों की विशद विवेचना की तथा उपस्थित श्रोताओं को आत्मनैर्मल्य की दिशा में प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण भी

हुआ। मुनि राजकुमारजी ने गीत का संगान किया।

भीलवाड़ा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री शैलेन्द्र बोरदिया और अ.भा.तेरापंथ महिला मंडल की महामंत्री श्रीमती पुष्पा बैद ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। लाडनूं से समागत महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया।

आज प्रातः मूर्तिपूजक खतरगच्छ सम्प्रदाय के आचार्य मणिप्रभसागरजी की शिष्या साध्वी हेमरत्नजी आदि साध्वियां आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थितु हुईं। पूज्यवर का उनसे विविध विषयों पर वार्तालाप हुआ। सायंकाल बालोतरा उपखंड के डी.एस.पी. श्री रामेश्वर मेघवाल ने श्रीचरणों में उपस्थित होकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

^0;kikj ,o Inkpkj* fo"k;d lEeyu

f… ebA आज का प्रातःकालीन सम्मेलन व्यापारी सम्मेलन के रूप में आयोजित हुआ। 'व्यापार एवं सदाचार' विषयक इस सम्मेलन में जिला अणुव्रत प्रभारी श्री ओम बांठिया, राजस्थान पेंशनर समाज बालोतरा उपशाखा के अध्यक्ष डॉ. केवलचन्द सालेचा ने अपने विचार रखे। मेवाड़ के कार्यकर्ता श्री सवाईलाल पोखरना एवं गणेश डागलिया ने अणुव्रत आचारसंहिता का बोर्ड भेंट किया।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'व्यापारी धनार्जन हेतु व्यापार करता है। उसका व्यापार सेवा भी है। व्यापार में सदाचार व नैतिकता रहे और इसके आधार पर व्यापारी व्यापार का नियोजन करता है तो वह समाज और देश के प्रति उसका कर्तव्य माना जाता है। व्यापारी ऐसे सूत्र स्वीकार करे, जिससे उसका जीवन प्रामाणिक बन सके।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आजीविका एक कर्म है, प्रवृत्ति है। परिवार के भरण-पोषण का यह माध्यम है। प्राचीन ग्रंथों में अर्थ, काम और धर्मरूप त्रिवर्ग का उल्लेख उपलब्ध होता है। गार्हस्थ्य जीवन के दो पहिए हैं अर्थ व काम। काम एक साध्य है, अर्थ उसका साधन है और धर्म नियामक है। धर्म का अर्थ पर अंकुश रहना चाहिए। यह स्पष्ट है कि अर्थ के बिना गृहस्थ का काम नहीं चलता। गृहस्थ के पास पैसा न हो तो यह लज्जा की बात हो जाती है। मांग कर खाना साधु का अधिकार है और यह उसके लिए कोई हीनता की बात नहीं है। गृहस्थ का दूसरों के आगे हाथ फैलाना उसकी दयनीयता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'आचार्य उमास्वाति ने तत्वार्थाधिगम सूत्र में लिखा है--**ijLijksixgks thokukeA** परस्पर सहयोग से जीवों का कार्य संपादित होता है। व्यक्ति को जो चाहिए, वह बाजार से उपलब्ध हो जाता है। यह सब सहयोग से संभव होता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत व आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के माध्यम से संयम की महत्ता प्रतिपादित की। व्यापार में नैतिकता की देवी का विराजमान होना आवश्यक है। नैतिकताविहीन व्यवसाय अपराध के ग्राफ को बढ़ा सकता है।' उपासना व नैतिकतारूप धर्म को रेखांकित करते हुए आचार्यवर ने कहा--'उपासना कर्म निर्जरा का साधन है और नैतिकता झूठ, धोखाधड़ी व गलत कार्य की वृत्ति पर अंकुश है। दोनों कार्य उपयोगी हैं। लेकिन इन दोनों में से किसी एक को चयन करने का प्रसंग आ जाए तो नैतिकता को पहला स्थान दें। आज भी ऐसे व्यापारी मिलेंगे, जो नैतिकता को प्रधानता देते हैं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

nEifr dk;"kkyk ,o lEeku lekjkg

मध्याह्न में स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा आयोजित दम्पति कार्यशाला में अपना उद्‌बोधन प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'दाम्पत्य जीवन की सफलता के लिए परिवार में शान्ति का होना आवश्यक है। शान्ति को पाने के लिए आग्रहमुक्त चिन्तन, औदार्य भाव व सहिष्णुता को विकसित एवं परिपुष्ट करना

चाहिए।' कार्यशाला के मुख्य प्रशिक्षक श्री चिमन सिंघवी (मुम्बई) ने सुखमय व सफल दाम्पत्य जीवन के सूत्रों की रोचक प्रस्तुति दी। मुनि दिनेशकुमारजी का प्रासंगिक वक्तव्य हुआ। तेयुप अध्यक्ष श्री ललित जीरावला ने स्वागत भाषण किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री निलेश सालेचा ने किया। कार्यक्रम में ३७० दम्पतियों सहित हजार लोगों ने भाग लिया।

रात्रि में आचार्यवर की सन्निधि में तुलसी साधना शिखर राजसमन्द द्वारा डॉ. बालकृष्ण गर्ग 'बालक' को 'आचार्य महाश्रमण सम्मान २०१२' से सम्मानित किया गया। पुरस्कार राशि, अभिनंदन पत्र और स्मृतिचिह्न के द्वारा साधना शिखर के कार्याध्यक्ष श्री भंवरलाल बागरेचा, उपाध्यक्ष श्री सवाईलाल पोखरना, मंत्री श्री गणेश डागलिया, बालोतरा के पुलिस उपअधीक्षक श्री रामेश्वरलाल आदि ने डॉ. गर्ग को सम्मानित किया।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा--'डॉ. बालकृष्णजी का उपनाम बालक है। ये अपने जीवन में अध्यात्म साधना को आगे बढ़ाते रहें।' कार्यक्रम का संचालन श्री जीतमल कच्छारा ने किया।

स्वीकार धर्म की शरण

f† ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि राजकुमारजी द्वारा गीत की प्रस्तुति के बाद मंत्री मुनिश्री ने कहा--'हमारे बहुआयामी जीवन में अनेक गुण व कमियां समाविष्ट हैं। धार्मिक व्यक्ति कषाय को नियंत्रण में रखने हेतु सदैव सचेष्ट रहता है। जीवन में आने वाली अनुकूल व प्रतिकूल परिस्थितियों में जो अपना संतुलन बनाए रखता है, वह व्यक्ति अपनी मंजिल पाने में सफल हो सकता है। परिस्थितियों को धैर्य व समता से झेंलें और कषाय को प्रतनु करें तो हम अध्यात्म के शिखर पर आरूढ़ हो सकते हैं।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने धर्म भावना पर प्रदत्त अपने मंगल प्रवचन में कहा--'चार शरणस्थलों में एक शरणस्थल है धर्म। जो धर्म की शरण स्वीकार कर लेता है, उसे सुरक्षा का आश्वासन मिल जाता है। धर्म एक भावना है, अनुप्रेक्षा है। धर्म आत्मकल्याण और आत्मशुद्धि का मार्ग है। धर्म के अनेक वर्गीकरण प्राप्त होते हैं। शान्तसुधारस भावना में धर्म के चार प्रकार वर्णित हैं--दान, शील, तप व भाव। यह चार रूप धर्म जिसके जीवन में अवतरित हो जाता है, माना जा सकता है कि धर्म उसके जीवन में आ गया।'

धर्म के प्रकारों को विश्लेषित करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा--'किसी शुद्ध साधु को विधि के अनुसार देना दान है। यह दान साधु की साधना में सहायक बनता है। पदार्थ पास में होते हुए भी जो दान नहीं दे सकता, उसके लिए पदार्थ भारभूत है। आचार्य भिक्षु के शब्दों में ऐसा व्यक्ति दरिद्र है। अन्तर्मन से शुद्ध दान देना तो सुपात्र दान है ही, शुद्ध साधु को शुद्ध दान देने की इच्छा करना भी धर्म है। शील अर्थात् ब्रह्मचर्य की साधना भी अपने आप में उत्तम साधना है। साधु के लिए तो विशेष रूप से शील की अनुपालना अनिवार्यतः वांछित होती है। एक गृहस्थ के लिए स्वदार, स्वपति संतोष व्रत उपयोगी है। तपस्या कर्म काटने का साधन है। तप के द्वारा मूर्च्छा समाप्त हो सकती है। व्यक्ति जैसे कोरपस एवं एफडी के माध्यम से अर्थ का संचय करता है, वैसे ही धर्म का संचय करे और स्वयं को धर्म की साधना में समर्पित करे।'

रात्रि में आयोजित काव्य संन्ध्या में मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि अजितकुमारजी, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी (मिंजूर), मुनि परमानंदजी एवं मुनि महावीरकुमारजी ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुति दी। मुनि कुमारश्रमणजी ने कुशल संचालन करते हुए अपनी प्रभावी काव्यमय प्रस्तुति दी। लगभग दो घंटे तक चली इस काव्य संन्ध्या में उल्लेखनीय उपस्थिति रही और लोग अंत तक डटे रहे।

१२-१४ मई तक प्रातः दो घंटे चली जीवनविज्ञान प्रशिक्षण एवं प्रेक्षाध्यान कक्षाओं में शासनश्री मुनि किशनलालजी एवं मुनि नीरजकुमारजी ने ध्यान के प्रयोग करवाए। समापन सत्र में आचार्यवर का संक्षिप्त, किन्तु प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। शिविर में लगभग सौ भाई-बहन संभागी बने।

iYyfor dj lRlLdkjk dk

f‡ ebA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी की गीत प्रस्तुति के बाद मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जिस श्रद्धा व उमंग के साथ व्यक्ति धार्मिक क्रिया प्रारंभ करता है, वह उत्साह सदैव बने रहना चाहिए। उत्साह की वर्धमानता के साथ क्रिया भी उतनी ही फलवती बन जाती है। क्रिया व उपासना के फल को हम भावना के द्वारा शतगुणित कर सकते हैं। अपेक्षा है हम प्राप्त समय का सदुपयोग करें।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में लोकभावना के अंतर्गत लोक-अलोक की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसे अनादि अनंत बताया और दुनिया के सर्वोत्तम प्राणी के रूप में मनुष्य को निरूपित करते हुए आपने कहा--'मनुष्य धरती का सर्वोत्तम प्राणी है तो सबसे अधम और निकृष्ट प्राणी भी मनुष्य ही है। अधमता के संस्कारों को समाप्त कर श्रेष्ठता के संस्कारों को सिंचन दें और उन्हें उजागर करने का प्रयास करें। असत् को विनष्ट कर सत्संस्कारों को पल्लवित करने का प्रयत्न करें।'

कार्यक्रम से पूर्व मूर्तिपूजक आम्नाय के मुनि चन्द्रयशविजयजी आचार्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए और पूज्यवर से विविध विषयों पर वार्तालाप किया। अपने उद्गार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा--'मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी की सरलता से बहुत प्रभावित हूं।'

आचार्यवर ने इस संदर्भ में कहा--'आज मूर्तिपूजक परंपरा के मुनियों से मिलना हुआ। मैं मुनिजी की उदारता के भाव को देख रहा हूं। हम सब अपनी साधना के पथ पर आगे बढ़ते रहें। कषाय मंदीकरण की साधना के द्वारा आत्मा को निर्मल बनाएं, यह अपेक्षा है।' कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

Lefr&lcy

- लाडनूं निवासी हैदराबाद प्रवासी श्रीमती रायकंवरीदेवी सिंघी (धर्मपत्नी-श्री ताराचन्दजी सिंघी) का स्वर्गवास हो गया। वे मृदुभाषी, सेवाभावी और धर्मपरायण श्राविका थीं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ से 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त श्रीमती रायकंवरीदेवी के लगभग सत्तर वर्षों से रात्रि भोजन का परिहार था। साधु-साध्वियों की सेवा बड़े मनोयोग से करती थीं। उन पर आचार्यों की विशेष कृपादृष्टि रही। लगभग डेढ़ घंटे के अन्न-जल के प्रत्याख्यान के साथ उन्होंने जीवन की यात्रा संपन्न कर ली। पिछले चार दशक से हैदराबाद में प्रवासित सिंघी परिवार समाज का प्रतिष्ठित परिवार हैं। उनके सुपुत्र सुमेरमलजी वहां के वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं।
- आमेट निवासी श्रीमती चंपादेवी हिरण (धर्मपत्नी-श्री मिश्रीमलजी हिरण) का देहावसान हो गया। वे मुनि तत्त्वरुचिजी की संसारपक्षीया मां थीं। गुरुभक्त, सरल, सेवाभावी और धार्मिक वृत्ति की श्राविका थीं। उनकी मिलनसारिता व व्यवहारकुशलता उल्लेखनीय थी। आचार्यों की दीर्घकालिक उपासना करती थीं।
- सिरसा निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री केसरीचन्दजी डागा का देहान्त हो गया। चार भाइयों में सबसे बड़े केसरीचन्दजी के मन में भिक्षु स्वामी के प्रति विशेष श्रद्धा-भक्ति का भाव था। उनकी धर्मपत्नी सुमन डागा धर्मनिष्ठ श्राविका है।
- फतेहपुर निवासी श्री चोरूलाल दूगड़ का संथारे में स्वर्गवास हो गया। दानवीर सेठ सोहनलालजी उनके चाचा थे। मुनि विमलविहारीजी, साध्वी मधुमतीजी उनके परिवार से संबद्ध हैं। दूगड़जी को लगभग पैंतीस मिनट का चौविहार संथारा आया। उनकी अन्तिम यात्रा में लोग बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। प्रतिदिन तीन सामायिक के अपने संकल्प को उन्होंने प्रायः पूरा निभाया। उन्होंने अपनी माता सुवटीदेवी दूगड़ के ग्यारहदिवसीय चौविहार संथारे का अनुगमन किया।
- जोधपुर निवासी श्रीमती कमलादेवी चौपड़ा (धर्मपत्नी-श्री भंवरलालजी चौपड़ा) का देहावसान हो गया। वे मुनि कुमुदकुमारजी की संसारपक्षीया मां थीं। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थीं। उन्होंने अपने परिवार को भी धर्म के अच्छे संस्कार दिए।

- सुजानगढ़ निवासी किशनगंज प्रवासी श्रीमती मोहनीदेवी चोरड़िया (धर्मपत्नी-स्व. मोहनलालजी चोरड़िया) का देहावसान हो गया। उनका जीवन धार्मिक वृत्ति से ओतप्रोत था। पचीस वर्ष की उम्र से वे रात्रि चौविहार करती रहीं। स्वभाव से बहुत शान्त व सरल थीं।
- बीदासर निवासी श्री भंवरलालजी बैंगानी का देहावसान हो गया। वे मुनि मुनिसुव्रतजी व साध्वी अमितप्रभाजी के संसारपक्षीय परिवार से संबद्ध थे। बारहव्रतधारी, तत्त्वज्ञानी, व्याख्यानरसिक भंवरलालजी मिलनसार और सादगीपसंद व्यक्ति थे। उनके ज्येष्ठ पुत्र रमेश शाहदरा-दिल्ली के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- बोरावड़ निवासी श्रीमती मोहनीदेवी कोटेचा का चौरानबे वर्ष की अवस्था में चौविहार संथारे में समाधिमरण हो गया। साध्वी ज्ञानांजी, साध्वी सोहनाजी, साध्वी विनयश्रीजी की वे संसारपक्षीया बहन थीं। वर्षों तक बोरावड़ महिला मंडल की अध्यक्ष रहीं। उन्हें अन्तिम समय में साध्वी तेजकुमारीजी आदि साध्वियों का आध्यात्मिक सहयोग प्राप्त हुआ। उनका जीवन त्याग-प्रत्याख्यान से युक्त था। दस वर्ष की आयु में जमीकन्द, सोलह वर्ष की उम्र में सचित्त का त्याग, नामपूर्वक दस सब्जी व पांच प्रकार के फलों के उपरान्त त्याग, पैंसठ वर्ष से रात्रि चौविहार व नवकारसी, प्रत्येक कृष्णा चतुर्दशी व शुक्ला तेरस को प्रायः उपवास, प्रतिदिन लगभग सात सामायिक, प्रतिवर्ष दो माह एकान्तर तप किया। साधु-साध्वियों की सेवा में सदैव तत्पर रहती थीं। उनके कपड़ों की दुकान थी, इस कारण वस्त्र दान की बहुत भावना रखती थीं।
- जोजावर निवासी शिमोगा प्रवासी श्रीमती लीलादेवी नाहर का स्वर्गवास हो गया। लंबे समय से असाध्य बीमारी से ग्रस्त होने पर भी उन्होंने सहनशीलता का परिचय दिया। वे श्रद्धाशील श्राविका थीं। उन्होंने छोटी-बड़ी अनेक तपस्याएं कीं। उनकी संथारे की प्रबल भावना पारिवारिकजनों के मोह के कारण संभव नहीं हो सकी, किन्तु डाक्टर की दवा के उपरान्त उन्होंने अन्न का परित्याग कर दिया। उनके पति श्री भंवरलाल नाहर मलनाड़ तेरापंथ सेवा समिति के मंत्री हैं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- भीनासर निवासी श्री सुरेन्द्रकुमार बैद (सुपुत्र-स्व.गुलाबचन्दजी बैद) का साठ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। वे लंबे समय से गुरुकुलवास में सेवारत साध्वी शारदाश्रीजी के संसारपक्षीय भ्राता थे। मिलनसार, मृदुभाषी, संघ और संघपति के प्रति समर्पित व साधु-साध्वियों के नियमित दर्शन करने वाले सुरेन्द्रजी के मरणोपरान्त नेत्रदान किया गया।
- कालू निवासी श्री किरणचन्द राखेचा (सुपुत्र-स्व.राजरूपजी राखेचा) का देहान्त हो गया। साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी सुधाप्रभाजी, साध्वी मंगलप्रज्ञाजी उनके परिवार से संबद्ध हैं। किरणचन्दजी स्पष्ट वक्ता, सरल एवं धर्मनिष्ठ श्रावक थे।

Kku'kkyk ikB;kid if'k{k.k f'kfojk dh lek;ktuk

ज्ञानशाला प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण एवं पूर्व में बने प्रशिक्षकों के रिफ्रेसर कोर्स के प्रशिक्षण हेतु ज्ञानशाला प्राध्यापकों (टीचर्स ट्रेनर) की सख्त जरूरत है। इसके लिए जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ के अंतर्गत आयोजित हो रहे तीन-तीन दिनों के ऐसे शिविरों में ज्ञानशाला स्नातकोत्तीर्ण प्रशिक्षक (७५ प्रतिशत प्राप्तांक), उपासक प्रवक्ता, जैनविद्या विज्ञ (७५ प्रतिशत प्राप्तांक), जैविभा युनिवर्सिटी से जैनदर्शन एम. ए. में उत्तीर्ण एवं प्रोफेशनल (सीए.,एमबीए, बी.एड आदि) भाग ले सकते हैं। उम्र सीमा ३० से ६० वर्ष तक है। इसके लिए जसोल में आयोजित हो रहे शिविरों की तारीखें निम्नोक्त हैं--(१) १-३ सितम्बर, (२) १३-१५ सितम्बर, (३) २२-२४ सितम्बर। इनमें किसी क्षेत्र व प्रान्त विशेष के लोग एक साथ संभागी बनना चाहें तो अतिशीघ्र संपर्क करें--ज्ञानशाला प्रकोष्ठ कार्यालय, राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा, मोबाइल नं.०९४२६१७१५१८, email.gyanshala @ ymail.com

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

mikld if'k{k.k f'kfoj % ,d lpuk

परमपूज्य आचार्यवर की पावन सन्निधि एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में आगामी ८-१७ जुलाई २०१२ तक जसोल में उपासक प्रशिक्षण शिविर की समायोजना की जा रही है। इस संदर्भ में अग्रांकित बिन्दु ध्यातव्य हैं--

- ८ जुलाई को मध्याह्न में आयोजित प्रवेश परीक्षा में चयनित नवागंतुक व्यक्ति ही शिविर में संभागी बन सकेंगे। प्रशिक्षण के पश्चात् १६ जुलाई को परीक्षा आयोजित होगी।
- जो सहयोगी उपासक दो बार अथवा उससे अधिक पर्युषण यात्रा कर चुके हैं और वे प्रवक्ता उपासक बनने के इच्छुक हैं, उनके लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार परीक्षा का आयोजन १६ जुलाई को है। प्रशिक्षण शिविर में उनकी उपस्थिति स्वैच्छिक है।
- १६-१८ जुलाई २०१२ तक प्रवक्ता उपासकों के लिए 'प्रेक्षाध्यान : सिद्धान्त एवं प्रयोग' विषयक कार्यशाला समायोज्य है। कार्यशाला में सहयोगी उपासकों की उपस्थिति स्वैच्छिक है।

प्रवेश परीक्षा के पाठ्यक्रम, शिविर प्रवेश की अर्हताओं तथा अन्य जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक श्री डालिमचन्द नौलखा से मोबाइल नं.०९३२७०७१३७६ एवं सहसंयोजक श्री महावीरप्रताप दूगड़ से मो.नं०९३३१०१९४५५ पर संपर्क किया जा सकता है।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- श्रीमती संतोषदेवी (पुत्रवधू-स्व. सोहनकंवर कानमलजी मूथा, धर्मपत्नी-श्री मानमल मूथा, ब्यावर-चेन्नई-दुबई) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में ज्ञानचन्द-भगवती, रतनचन्द-कान्ता, डूंगरचन्द-संन्ध्या मूथा, सुपुत्र व पुत्रवधू ललित-प्रमिला व सुपौत्र हेम मूथा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. कृतिका संचेती (सुपौत्री-अमरचन्दजी-कन्यादेवी, सुपुत्री-सुरेशचन्द-ललिता संचेती) की स्मृति में बाबासा प्रकाश-मंजु, भ्राता विकास, पंकज, बृजेश, भावेश संचेती, सोजतरोड-बेंगलुरु द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी जसराज मेहता की १२वीं पुण्यतिथि एवं अणुव्रतसेवी श्री जसराजजी के ८२वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र जीतमल, जोधराज, रमेशकुमार, विमलकुमार, सुपौत्र हरीशकुमार मेहता, सायरा-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती केसरदेवी सेठिया (धर्मपत्नी-स्व. पांचीलाल सेठिया, सरदारशहर) की १५वीं पुण्यतिथि पर उनकी पुत्रवधू श्रीमती संतोषदेवी सुपौत्र व पौत्रवधू प्रदीप-स्नेहलता, मनोज-संगीता, कुलदीप-श्वेता, प्रपौत्र रवि, वर्द्धमान, प्रपौत्री पूजा, मुस्कान, ईशा, कनिष्का सेठिया, कोलकाता-कटिहार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती नारंगीदेवी (धर्मपत्नी-श्री मगराजजी गादिया, रानीस्टेशन-बेंगलुरु) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र देवेन्द्र, सुरेश, मनोहर, पदम, सुपौत्र शनि, भाविक, सौरभ, कुशल, पारुल, सुपौत्री मितिशा, रोहिणी गादिया द्वारा प्रदत्त।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&tu 'orkEcj rjkiFkh lHkk
ik- ckykrjk&…†† ,„„] ft- ckMej ¼jktLFkku½ Qku % ,‹^Š,‚‡‡…Šƒ] ,‹…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % ƒ‹&‡&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **d'koilkn pronhA**